© iStock.com/Ariusz Nawrocki

दूसरे एंडोर्समेंट

''कार्यक्रम युवा दिमाग को प्रोत्साहित करने और जानवरों के प्रति करुणा विकसित करने में उन्हें संवेदनशील बनाने के लिए एक अच्छी पहल है.''

– श्री एस श्रीनिवास स्वामी, मास्टर-इन-चार्ज, द दून स्कूल, देहरादून

''दयालु नागरिक कार्यक्रम ने जानवरों को समझने और उनकी देखभाल करने की जरूरत पर ध्यान केंद्रित किया है जबकि बच्चों को मानवीय व्यवहार और जानवरों के प्रति सम्मान प्रदान करना सिखाया है. परस्पर संवादात्मक सत्र ने सोचने पर मजबूर किया.''

– सुश्री गायत्री रामचंद्रन, सामाजिक जागरूकता और आउटरीच के निदेशक, सेंट कोल्बा स्कूल, नई दिल्ली

''सामग्री बहुत उपयोगी है क्योंकि इससे हमारे युवाओं को जानवरों के लिए दयालु होने के प्रति संवेदनशील बनाने में मदद मिलती है. हमने पहले ही यह सुनिश्चित कर दिया है कि सभी स्तरों-नर्सरी से छठी कक्षा को सामग्री में सूचीबद्ध गतिविधियों से अवगत कराया जाएगा है और इसे हमारी नियमित स्कूल गतिविधियों के हिस्से के रूप में जारी रखने की उम्मीद है. हमने इस कार्यक्रम के बारे में माता-पिता को जागरूक करने के लिए हमारी वेबसाइट पर कुछ मूल्य आधारित कहानियां भी अपलोड की हैं.''

– श्रीमती सुमिता गुप्ता, मुख्याध्यापिका, दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) इंटरनेशनल, नई दिल्ली

''कार्यक्रम बहुत जानकारीपूर्ण और दिलचस्प था. वीडियो ने जानवरों के बारे में कुछ आश्चर्यजनक तथ्यों को उजागर किया. यह बच्चों को जानवरों की दुर्दशा, विशेष रूप से बेसहारा जानवरों के बारे में संवेदित करता है. क्योंकि यह परस्पर संवादात्मक सत्र था, बच्चे जानवरों के साथ उनके बहुत सारे विचारों और अनुभवों को साझा कर सकते हैं.''

– सुश्री मारिया दा सिल्वा, मुख्याध्यापिका, जमनाबाई नरसी स्कूल, मुंबई

''यह हमारे छात्रों के लिए अद्भुत और समृद्ध करने वाला अनुभव था''

– सुश्री स्नेहा निगांधी, एक्टिविटीज़ कोऑर्डिनेटर, आदित्य बिरला वर्ल्ड एकेडमी स्कूल, मुंबई

''आज के अंतहीन हिंसा के दौर में, करुणा कभी-कभी एक दुर्लभ गुण लगता है. यह अब अच्छी तरह से दर्ज किया जा चुका तथ्य है कि कई हत्यारों और अन्य अपराधियों का जानवरों के प्रति क्रूरता का इतिहास रहा है. अपराध को कम करने के प्रयास में छोटे बच्चों को दयालुता का सबक सिखाना एक अच्छा निवारक उपाय हो सकता है. दयालु नागरिक एक उचित साधन है, जिसका उपयोग जानवरों सहित सभी प्राणियों के प्रति दयालु और सम्मानजनक होने और कम हिंसक और अधिक शांतिपूर्ण समाज बनाने में मदद करने के लिए बच्चों को संवेदनशील बनाने के लिए किया जा सकता है.''

– श्री प्रकाश कृष्णा गवाने, वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक, ठाणे, महाराष्ट्र

COMPASSIONATE CITIZEN

दयालु नागरिक कार्यक्रम: संक्षिप्त विवरण

प्राकृतिक दुनिया में जानवर एक अभिन्न भूमिका निभाते हैं, फिर भी संपूर्ण इतिहास में देखा जाए तो लोगों ने अक्सर जानवरों से भावनाओं वाले जीव की तुलना में एक वस्तु की तरह व्यवहार किया है. डॉ. जेन गुडल जैसे प्रकृतिविदों को धन्यवाद, कि अब हम यह स्वीकार करते हैं कि जैसा हम पहले मानते थे उसकी तुलना में जानवर कहीं अधिक जटिल हैं और वे चिंता, दुख और खुशी का अनुभव कर सकते हैं.

आज के युवा लोगों के लिए, जानवरों के प्रति सहानुभूति विकसित करना मनुष्यों सहित सभी प्राणियों के प्रति – करूणा विकसित करने – और हिंसा को त्यागने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है. इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि छात्र इस बात को जानें कि जिन जानवरों के साथ हम इस ग्रह को साझा करते हैं वे कई मायनों में, हमसे कुछ ज्यादा अलग नहीं हैं.

व्यापक अनुसंधान के बाद, शैक्षिक सलाहकारों और शिक्षकों ने यह निर्धारित किया है कि छात्रों को मानवीय शिक्षा देने का सबसे अच्छा समय तब होता है जब वे ८ और १२ वर्ष के होते हैं. इस आयु के बच्चे यह समझ सकते हैं कि क्रूरता नैतिक रूप से गलत क्यों है.

दयालु नागरिक पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स (पीटा) का भारतीय संस्करण है, जो कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त पीटा अमेरिका का मानवीय शिक्षा कार्यक्रम है, उस दुनिया को साझा करें, जिसे ८ से १२ वर्ष के छात्रों को बेहतर समझने और जानवरों की प्रशंसा करने के लिए तैयार किया गया है.

अधिकांश बच्चे स्वाभाविक रूप से जानवरों के लिए चिंता और स्नेह महसूस करते हैं, लेकिन समाज से क्रूरता सीखते हैं और अक्सर उनकी करुणा को नजरअंदाज करते हैं. बेशक, अन्य प्रजातियों के प्रति सम्मान की कमी लोगों के प्रति असंवेदनशीलता और क्रूरता में भी बदल सकती है. यह अब समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा यह अच्छी तरह से दर्ज किया गया है कि बच्चों द्वारा जानवरों के प्रति की गई हिंसा अक्सर भविष्य में मनुष्यों के प्रति हिंसा के कार्योंके होने का चेतावनी संकेत है. शिक्षा के माध्यम से, हम ऐसा भविष्य सुनिश्चित करने की आशा करते हैं, जिसमें जानवर, वह पर्यावरण जिसमें वे रहते हैं और हमारे साथी इंसानों से दयालुपूर्ण और सम्मान से व्यवहार किया जाता है.

दयालु नागरिक शैक्षिक संसाधन को, **एनीमल वेल्फयर बोर्ड ऑफ इंडिया** (एडब्ल्यूबीआई), **सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी** एज्युकेशन (सीबीएसई) और **केन्द्रीय विद्यालय** संगठन (केवीएस) ने समर्थन दिया है. सीबीएसई और केवीएस ने एक साथ पूरे भारत में १९,००० से अधिक संबद्ध स्कूलों को सूचनाएं जारी की हैं और यह **समझाया है कि भाषा कला, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, पर्यावरण विज्ञान और** मूल्य की शिक्षा के माध्यम से स्कूल पाठ्यक्रम में आसानी से शामिल कैसे किया जा सकता है. यह स्कूलों में अखंडता, पर्यावरण और जानवर अधिकार क्लबों में उपयोग के लिए भी एकदम सही है. यद्यपि इसे मासिक पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए तैयार किया गया था, इस कार्यक्रम का उपयोग थोड़े समय के लिए किया जा सकता है, जिसमें एक दिवसीय कार्यशाला भी शामिल है. दयालु नागरिक की स्कूलों और शिक्षकों के लिए मुफ्त पेशकश की जाती है और सरकार, निजी, अंतरराष्ट्रीय, सीबीएसई-संबद्ध और केवीएस स्कूलों के साथ-साथ आंध्र प्रदेश, चंडीगढ़, दिल्ली, गोवा, गुजरात, हरियाणा, केरल, मध्य प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में १.६ लाख से अधिक स्कूलों द्वारा उपयोग किया गया है तथा पूरे भारत में करीब ६ करोड़ बच्चों तक पहुंच रहा है. दयालु नागरिक

''किसी देश की महानता को इस तथ्य से आंका जा सकता है कि वह जानवरों के साथ कैसा व्यवहार करता है.'' – महात्मा गांधी

का इस्तेमाल करने वाले प्रमुख स्कूलों में शामिल हैं देहरादून में दून स्कूल नई दिल्ली में सेंट कोलंबस स्कूल, दिल्ली पब्लिक स्कूल, स्प्रिंगडैल्स स्कूल; मदर इंटरनेशनल स्कूल और नई दिल्ली में संस्कृति स्कूल; और मुंबई में इकोलेमोंडियल वर्ल्ड स्कूल; बॉम्बे स्कॉटिश स्कूल; जमनाबाई नरसी इंटरनेशनल स्कूल; और आदित्य बिरला वर्ल्ड एकेडमी स्कूल. इस कार्यक्रम का इस्तेमाल और प्रचार कई गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) द्वारा भी किया जाता है, जिसमें लाइफ ट्रस्ट, पीपल फॉर एनिमल, राष्ट्रीय ग्राम उत्थान संस्थान चौरिटेबल ट्रस्ट और सतनाम सेवा आश्रम शामिल हैं.

दयालु नागरिक का नवीनतम संस्करण वर्तमान में अंग्रेजी और हिंदी में उपलब्ध है, लेकिन जरूरत हो तो अन्य भाषाओं में उपलब्ध कराया जा सकता है.

ऐसी गतिविधियां जो कार्यक्रम को तैयार करती हैं में, छात्र जानवरों के सार्थक और जटिल जीवन की जांच करने के लिए अपने तर्क और लेखन कौशल का उपयोग करते हैं, समय के साथ उनके साथ हमारे संबंधों में परिवर्तनों का पता लगाते हैं, उनके उपयोग के विकल्पों को खोजते हैं और सीखते हैं कि जानवरों के मुसीबत में होने पर क्या करें. कार्यक्रम को पूरा करने के बाद, छात्रों को जानवरों की गहन समझ प्राप्त होगी और वे सीखेंगे कि उनसे कैसे और किस तरह ऐसे साथी की तरह व्यवहार करना चाहिए, जो करुणा और सम्मान के पात्र हैं.

इस कार्यक्रम में २३-मिनट की एक वीडियो शामिल है, जिसमें जानवरों की चर्चा के लिए सुझाए गए विषय और फुटेज शामिल हैं. पैक में शिक्षक की मार्गदर्शिका, बार-बार प्रस्तुत करने योग्य एक्टिविटी शीट, जिसमें रंगीन शीट और दयालु शपथ जिस पर बच्चे हस्ताक्षर कर सकते हैं, एक पूरा-रंगीन वॉल पोस्टर और जानवरों की मदद करने के आसान तरीके बताने वाला प्रपत्र शामिल है, जिससे शिक्षक और विद्यालय जानवरों की मदद करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित कर सकते हैं. वीडियो में बच्चों द्वारा संवाद बोले गए हैं, ताकि छात्र उनसे जुड़ सकें और अपने साथियों से प्रेरित हो सकें.

कार्यक्रम की सफलता को मापने में मदद करने के लिए शिक्षकों को पीटा को प्रतिक्रिया भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है.

लारा दत्ता

''स्कूल के पाठ्यक्रम में दयालु नागरिक को शामिल करना सामाजिक रूप से जागरूक बच्चों की ऐसी नई पीढ़ी बनाने की दिशा में लंबा रास्ता तय करेगा, जिनके पास जानवरों और वह पर्यावरण जिसमें वे रहते हैं उिस कीं बेहतर समझ और सम्मान है.''

रवीना टंडन थडानी

''मेरे बच्चे घर पर हमेशा बचाए गए जानवरों से घिरे रहे हैं और इससे उसमें प्यार, करुणा और सम्मान का भाव पैदा हुआ है. दयालु नागरिक जैसे शैक्षिक कार्यक्रम, जानवरों, जिस पर्यावरण में हम रहते हैं उसके लिए और लोगों में सहानुभूति और प्रशंसा विकसित करने में मदद करेंगे.''

जैकी श्रॉफ

''दया मुझे मेरी मां से मिली है और, मेरे लिए, सभी बच्चों को सभी जीवों के प्रति देखभाल और महसूस करने के इस गुण को देना चाहिए. दयालु नागरिक, मुझे लगता है, जानवरों के लिए सम्मान विकसित करने में बच्चों की मदद करने के लिए एकदम सही कार्यक्रम है.''

अनुपम खेर

''बच्चों को सभी जीवों की प्रशंसा करने के लिए मानव जीवन के मूल्य को पढ़ाने से ज्यादा अच्छा कोई दृष्टिकोण नहीं है. यदि आप किसी बच्चे को हमारे बीच सबसे छोटे और सबसे हानिकारक जीव का सम्मान करना और उसे संरक्षण देना सिखा सकते हैं – जैसा कि पीटा का मानवीय–शिक्षा कार्यक्रम करता है – तो आप एक बेहतर नागरिक बनाते हैं.''

© Gaurav Sawn

मैंगते चंग्नेइजैंग मैरी कॉम

''जानवरों के प्रति क्रूरता खत्म करने का सबसे बेहतरीन उपाय है युवाओं को करुणा सिखाना, जानवर अपनी जगह में हमें देखना चाहते हैं. हमारे चारों तरफ हिंसा प्रतीत होने के साथ, यह पहले से कहीं ज्यादा जरूरी है कि हम कक्षा में सम्मान और दया के पाठ सिखाएं.''